षड्विंश खण्ड

काशीपुर-बागान में सांगोपांगों के संग श्रीरामकृष्ण

प्रथम परिच्छेद

(काशीपुर-बागान में भक्तों के संग में)

श्रीरामकृष्ण काशीपुर के बागान में उसी ऊपर वाले कमरे में शय्या के ऊपर बैठे हुए हैं। कमरे में शशी और मणि हैं। ठाकुर मणि को इशारे से कह रहे हैं, पंखा करने के लिए। वे पंखा झल रहे हैं।

समय प्रात: 5-6 का। सोमवार, चड़क संक्रान्ति*, वासन्ती महाष्टमी-पूजा— चैत्र शुक्लाष्टमी, 31 चैत्र; 12 अप्रैल, 1886 ईसवी।

उसी मुहल्ले में ही चड़क हो रही है। ठाकुर ने एक भक्त को चड़क की कुछ वस्तुएँ खरीद कर लाने के लिए भेजा था। भक्त लौट आए हैं।

श्रीरामकृष्ण— क्या-क्या लाया?

भक्त— बतासे— एक पैसा, बोटि (दरांत)— दो पैसा, कड़छी— दो पैसा।

श्रीरामकृष्ण— छुरी कहाँ?

भक्त— दो पैसे में नहीं दी।

श्रीरामकृष्ण *(व्यग्र होकर)*— जा जा, छुरी ला।

मास्टर नीचे टहले रहे हैं। नरेन्द्र और तारक कलकत्ता से लौटे हैं। वे

* बंगाली वर्ष का अन्तिम दिन। इस दिन मेला आदि भी लगता है।

गिरीश घोष के घर और अन्य-अन्य स्थानों पर गए थे।

तारक— आज हमने माँस-वाँस बहुत खाया।

नरेन्द्र— आज मन अनेक नीचे उतर गया है। तपस्या लगाओ।

(मास्टर के प्रति)— ''कैसी slavery of body, of mind (शरीर का दासत्व— मन का दासत्व) ठीक जैसे कुली की अवस्था! शरीर, मन जैसे मेरे नहीं हैं, और किसी के हैं।''

सन्ध्या हो गई। ऊपर के कमरे में तथा अन्य स्थानों पर प्रकाश कर दिया गया है। ठाकुर बिछौने पर उत्तरास्य हुए बैठे हैं, जगन्माता का चिन्तन कर रहे हैं। कुछ क्षणों पश्चात् फकीर ठाकुर के सम्मुख अपराधभञ्जन-स्तव-पाठ कर रहे हैं। फकीर बलराम के पुरोहित-वंशीय हैं।

''प्राग्देहस्थो यदासं तव चरणयुगं नाश्रितो नार्चितोऽहम्,
तेनाहं दुःखवर्गैर्जठरजननजैर्बाध्यमानो बलिष्ठैः॥
स्थित्वा जन्मान्तरे नो पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वापि सेवा,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले!'' इत्यादि

[भावार्थ— जन्म ग्रहण करने से पूर्व गर्भावस्था में मैंने गर्भस्थ यातनाओं की बहुत ही बलिष्ठ पीड़ा भोगी, लेकिन जन्म ग्रहण करने पर फिर भी मैंने आपके चरणों का आश्रय नहीं लिया और न ही उनकी अर्चना की। अनेक जन्म भोगकर भी मैंने आपका आश्रय नहीं लिया और न ही आपकी सेवा की। हे प्रकटित (खुले) मुख वाली, इच्छानुसार रूप धारण करने वाली कराल देवि, मेरा अपराध क्षमा करना।]

कमरे में शशी, मणि और भी दो-एक भक्त हैं।

स्तवपाठ समाप्त हो गया। ठाकुर श्रीरामकृष्ण अति भक्ति-भाव से हाथ जोड़कर नमस्कार कर रहे हैं।

मणि पंखा कर रहे हैं। ठाकुर इशारा करके उनसे कह रहे हैं, एक 'पाथर बाटि' (पत्थर की कटोरी) लाना। यह कहकर पत्थर की कटोरी की गठन उँगली द्वारा अंकन करके दिखाई। ''एक पाव, इतना दूध आ जाएगा? सफेद पत्थर की हो।''

मणि— जी हाँ।

श्रीरामकृष्ण— और सब बाटियों में झोल खाने से माँस की गन्ध-सी लगती है।

द्वितीय परिच्छेद

(ईश्वरकोटि का क्या कर्मफल, प्रारब्ध है ? योगवाशिष्ठ)

दूसरा दिन मंगलवार, रामनवमी, पहला बैशाख; 13 अप्रैल, 1886 ईसवी। प्रात:काल, ठाकुर श्रीरामकृष्ण ऊपर के कमरे में शय्या पर बैठे हुए हैं। समय 8-9 का होगा। मणि रात थे, प्रात: गंगा-स्नान करके आकर ठाकुर को प्रणाम कर रहे हैं। राम (दत्त) सुबह आए हैं और प्रणाम करके बैठ गए। राम फूलों की माला लाए हैं और ठाकुर को निवेदन की। भक्तों में से अनेक ही नीचे बैठे हुए हैं। दो-एक जन ठाकुर के कमरे में हैं। राम ठाकुर के साथ बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(राम के प्रति)*— कैसा देख रहे हो ?

राम— आपका सब ही है। अब रोग की सब बातें उठेंगी।

श्रीरामकृष्ण ने ईषत् हास्य किया और संकेत करके राम से ही पूछ रहे हैं— ''रोग की बातें भी उठेंगी ?''

ठाकुर का चटि जूता पाँव में लगता है। डॉक्टर राजेन्द्र दत्त ने माप देने के लिए कहा— वे फरमाइश (आज्ञा) पर बनवाएँगे। ठाकुर के पाँव का माप ले लिया। (इन पादुकाओं की ही अब बेलुड़मठ में पूजा होती है।)

श्रीरामकृष्ण मणि को संकेत कर रहे हैं, ''कहाँ पाथर बाटि ?'' मणि तत्क्षण उठकर खड़े हो गए— कलकत्ता 'पत्थर की कुँडी' लेने जाएँगे।

श्रीरामकृष्ण कह रहे हैं, ''अब रहने दे, रहने दे।''

मणि— जी नहीं, ये सब जा रहे हैं, इन्हीं के संग ही जाता हूँ।

मणि ने नूतन बाजार के जोड़ाशांको के चौराहे की एक दुकान से एक सफेद पत्थर की कुण्डी खरीद ली। दोपहर का समय हो गया है, उस समय काशीपुर में वापस आए और ठाकुर के निकट आकर प्रणाम करके वह कुण्डी रख दी। ठाकुर सफेद कुण्डी हाथ में लेकर देख रहे हैं।

डॉक्टर राजेन्द्र दत्त, हाथ में गीता लिए श्रीनाथ डॉक्टर, श्रीयुक्त राखाल, हलदार और भी कई जन भक्त आ उपस्थित हुए। कमरे में राखाल, शशी, छोटे नरेन आदि भक्तगण हैं। डॉक्टरों ने ठाकुर की पीड़ा के सम्बन्ध में समस्त संवाद लिया।

श्रीनाथ डॉक्टर *(बन्धुओं के प्रति)*— सब ही प्रकृति के अधीन हैं। कर्मफल से कोई बच नहीं सकता! प्रारब्ध!

श्रीरामकृष्ण— क्यों?— उनका नाम करने पर, उनका चिन्तन करने पर, उनके शरणागत होने पर—

श्रीनाथ— जी, प्रारब्ध कहाँ जाएगा?— पूर्व-पूर्व जन्म का कर्म?

श्रीरामकृष्ण— थोड़ा-सा तो कर्मफल-भोग होता ही है। किन्तु उनके नाम के गुण से बहुत-सा कर्मपाश कट जाता है। कोई जन पूर्वजन्म के कर्म के कारण सात जन्म अन्धा होता, किन्तु उसने गंगास्नान कर लिया। गंगास्नान से मुक्ति होती है। उस व्यक्ति का चक्षु जैसा अन्धा था वैसा ही रहा, किन्तु और छः जन्म उसके नहीं हुए।

श्रीनाथ— जी, शास्त्र में तो है, कर्मफल किसी के द्वारा भी हटाए नहीं जा सकते।

श्रीनाथ डॉक्टर तर्क करने के लिए उद्यत हो गए।

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति)*—बोल ना! ईश्वरकोटि और जीवकोटि का बहुत अन्तर है। ईश्वरकोटि का अपराध नहीं होता, बोल ना!

मणि चुप किए हुए हैं। वे राखाल से कह रहे हैं, "तुम बोलो।"

कुछ क्षण के बाद डॉक्टर लोग चले गए। ठाकुर श्रीयुक्त राखाल, हलदार के साथ बातें कर रहे हैं।

हलदार— श्रीनाथ डॉक्टर वेदान्त की चर्चा करते हैं— योगवाशिष्ठ पढ़ते हैं।

श्रीरामकृष्ण— संसारी होकर 'सब स्वप्नवत्'— यह मत अच्छा नहीं।

एक भक्त— कालिदास कहता है, "वह व्यक्ति भी वेदान्त-चर्चा करता है; किन्तु मुकदमा करके उसका सर्वस्व अन्त (सब धन-सम्पत्ति का नाश) हो

गया है।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— सब माया— और फिर मुकदमा! *(राखाल के प्रति)* जनाइयों के मुखुज्ये पहले बड़ी-बड़ी बातें किया करते थे। तत्पश्चात् शेषकाल (अन्त) में खूब समझ गए! मैं यदि ठीक रहता तो उनके संग और थोड़ी देर बातें करता। ज्ञान क्या ज्ञान-ज्ञान कहने पर ही हो जाता है?

(कामजय दृष्टे ठाकुर श्रीरामकृष्ण का रोमाञ्च)

हलदार— बहुत ज्ञान देख लिया है। थोड़ी भक्ति होने पर बचूँ। उस दिन एक बात याद करके आया था। उसकी आपने मीमांसा कर दी है।

श्रीरामकृष्ण *(व्यग्र होकर)*— क्या? क्या?

हलदार— जी, इस लड़के के आने पर आपने कहा कि यह जितेन्द्रिय है।

श्रीरामकृष्ण— हाँ, भाई, उसके *(छोटे नरेन के)* भीतर विषयबुद्धि ने मूल से ही प्रवेश नहीं किया है! वह कहता है काम किसे कहते हैं, नहीं जानता। *(मणि के प्रति)* ''हाथ लगाकर देख, मुझे रोमाञ्च हो रहा है!''

काम नहीं, ऐसी शुद्ध अवस्था याद करके ठाकुर को रोमाञ्च हो रहा है। जहाँ पर काम नहीं वहाँ ईश्वर वर्तमान हैं। यह बात याद करके ही क्या ठाकुर को ईश्वर का उद्दीपन हो रहा है?

राखाल, हलदार ने विदा ली।

श्रीरामकृष्ण अभी भी भक्तों के संग में बैठे हुए हैं। पगली उन्हें देखने के लिए बड़ा ही उपद्रव करती है। पगली का है मधुर भाव। बागान में प्राय: आती है और दौड़ती-दौड़ती ठाकुर के कमरे में आ जाती है। भक्तगण प्रहार भी करते हैं— किन्तु उससे भी रुकती नहीं।

शशी— पगली अब की बार आई तो धक्का मारकर भगा दूँगा।

श्रीरामकृष्ण *(करुणा भरे स्वर में)*— ना, ना। आएगी, चली जाएगी।

राखाल— पहले-पहले इनके पास और कई जनों के आ जाने पर मुझे डाह हुआ करती थी। उसके पश्चात् इन्होंने कृपा करके मुझे जनवा (समझा)

दिया है— 'मद्गुरु श्रीजगत गुरु!' (मेरे गुरु जगत-गुरु)— वे क्या केवल हमारे लिए आए हैं?

शशी— वह तो निश्चय ही नहीं, किन्तु असुख के समय ऐसा उपद्रव क्यों!

राखाल— उपद्रव तो सब ही करते हैं। सब ही क्या शुद्ध होकर उनके निकट आए हैं? उन्हें हमने कष्ट नहीं दिया? नरेन्द्र-वरेन्द्र पहले किस प्रकार के थे— कितना तर्क किया करता था!

शशी— नरेन्द्र जो मुख से कहता था, कार्य में भी वही करता था।

राखाल— डॉक्टर सरकार ने कितना करके उनको बोला है! खोजने, जाँच करने लगो तो कोई भी निर्दोष नहीं है।

श्रीरामकृष्ण *(राखाल के प्रति, सस्नेह)*— कुछ खाएगा?

राखाल— नहीं;— अब खाऊँगा।

श्रीरामकृष्ण मणि को संकेत कर रहे हैं, तुम आज यहाँ पर खाओगे?

राखाल— खाइए ना! वे कह रहे हैं।

ठाकुर पंचवर्षीय बालक की न्यायीं दिगम्बर हुए भक्तों के संग में बैठे हुए हैं। उस समय पगली सीढ़ियों से चढ़ कर कमरे के दरवाजे के पास खड़ी हुई है।

मणि *(शशी से, आहिस्ते-आहिस्ते)*— नमस्कार करके जाने के लिए बोलो, कुछ और बोलने का प्रयोजन नहीं है।

शशी ने पगली को नीचे उतार दिया।

आज नववर्ष आरम्भ है, अनेक स्त्री भक्त आई हैं। ठाकुर को और श्री श्री माँ को प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद लिया। श्रीयुक्त बलराम का परिवार, मणिमोहन का परविार, बागबाजार की ब्राह्मणी तथा और भी बहुत-सी स्त्री भक्त आई हैं। कोई-कोई सन्तान आदि को भी लेकर आईं।

वे लोग ठाकुर को प्रणाम करने के लिए ऊपर के कमरे में आईं। किसी-किसी ने ठाकुर के पादपद्मों में पुष्प और अबीर दिया। भक्तों की

दो 9-10 वर्ष की लड़कियाँ ठाकुर को गाना सुना रही हैं—

जुड़ाइते चाइ, कोथाय जुड़ाइ,
कोथा होते आसि, कोथा भेसे जाइ।
फिरे फिरे आसि, कत काँदि हासि,
कोथा जाइ सदा भावि गो ताइ॥

[भावार्थ— शान्ति पाना चाहता हूँ, कहाँ शान्ति पाऊँ? कहाँ से आ रहा हूँ, कहाँ तैरता जा रहा हूँ। लौट-लौटकर जाता हूँ, कितना रोता-हँसता हूँ, कहाँ पर जाऊँ— सर्वदा यही विचार करता हूँ, भाई मेरे।]

गान— हरि हरि बोलरे वीणे।

गान— ओइ आसछे किशोरी, ओइ देख एलो
तोर नयन बांका बंशीधारी।

[ऐ किशोरी, देख, वह सामने आ रहा है, तेरा नयन बाँका बंशीधारी।]

गान— दुर्गानाम जप सदा रसना आमार,
दुर्गमे श्री दुर्गा बिने के करे उद्धार?

[ऐ मेरी रसना, तू सदा दुर्गा-नाम जप करती रह। संकट में बिना दुर्गा के कौन उद्धार करेगा?]

श्रीरामकृष्ण संकेत करके बतला रहे हैं, ''माँ! माँ! बड़ा ही सुन्दर कह रही हैं ये!''

ब्राह्मणी का बालकों जैसा स्वभाव है। ठाकुर हँसकर राखाल से इंगित कर रहे हैं, ''उसको गाना गाने के लिए बोलो ना!'' ब्राह्मणी गाना गा रही हैं। भक्त हँस रहे हैं।

'हरि खेलबो आज तोमार सने,
एकला पेयेछि तोमाय निधुबने।'

[हरि, आज तुम्हारे साथ खेलूँगी। आज तुम मुझे निधुबन में अकेले मिल गए हो।]

लड़कियाँ ऊपर के कमरे से होकर नीचे चली गईं।

शाम का समय है। ठाकुर के निकट मणि और दो-एक भक्त बैठे हुए हैं। नरेन्द्र ने कमरे में प्रवेश किया। श्रीरामकृष्ण ठीक ही कहते हैं, नरेन्द्र जैसे म्यान से निकली तलवार लेकर टहलता है।

(संन्यासी के कठिन नियम और नरेन्द्र)

नरेन्द्र आकर ठाकुर के पास बैठ गए। ठाकुर को सुनाकर नरेन्द्र स्त्रियों के सम्बन्ध में, जिसका अन्त नहीं, ऐसा विरक्ति-भाव प्रकाश कर रहे हैं। स्त्रियों का संग ईश्वर-लाभ में भयानक विघ्न है— कह रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण कोई भी बात नहीं कह रहे, सब सुन ही रहे हैं।

नरेन्द्र फिर कह रहे हैं, मैं शान्ति चाहता हूँ, मैं ईश्वर तक को नहीं चाहता। श्रीरामकृष्ण नरेन्द्र को एकदृष्टि से देख रहे हैं। मुख में कोई बात नहीं। नरेन्द्र बीच-बीच में सुर करके कह रहे हैं— सत्यम् ज्ञानमनन्तम्।

रात्रि आठ। ठाकुर शय्या पर बैठे हुए हैं, दो-एक भक्त भी सम्मुख बैठे हैं। सुरेन्द्र ऑफिस का काम समाप्त करके ठाकुर से मिलने आए हैं। हाथ में चार सन्तरे (कमलालेबु) और फूलों की दो मालाएँ हैं। सुरेन्द्र भक्तों की ओर एक-एक बार और ठाकुर की ओर एक-एक बार देख रहे हैं, और हृदय की समस्त बातें कह रहे हैं।

सुरेन्द्र *(मणि प्रभृति की ओर देखकर)*— ऑफिस का काम सब खत्म करके आया हूँ। सोचा, दो नौकाओं में पाँव देने से क्या होगा, काज समाप्त करके ही आना अच्छा है। आज पहला बैशाख है और फिर मंगलवार, कालीघाट पर जाना नहीं हो पाया। सोचा (स्वयं) जो काली हैं, जिन्होंने काली को ठीक पहचाना है, उनका दर्शन करने से ही हो जाएगा।

ठाकुर श्रीरामकृष्ण ईषत् हास्य कर रहे हैं।

सुरेन्द्र— गुरु-दर्शन, साधु-दर्शन के लिए सुना है, फूल-फल लेकर आना चाहिए। जभी ये लाया हूँ। आपके लिए रुपया खरच— वह तो भगवान मन देखते हैं। कोई तो एक भी पैसा खरच करते कातर हो जाता है और फिर कोई हजार रुपया खरच करते हुए भी कुछ बोध नहीं करता। भगवान मन की

भक्ति देखते हैं, तब ग्रहण करते हैं।

ठाकुर सिर हिलाकर संकेत करके कह रहे हैं,
''तुम ठीक कहते हो।''

सुरेन्द्र और भी कह रहे हैं,
''कल आ नहीं सका, संक्रान्ति को। आपकी छवि को फूलों द्वारा सजाया।''

श्रीरामकृष्ण मणि को संकेत करके बता रहे हैं,
''आहा, क्या भक्ति है!''

सुरेन्द्र— आ रहा था, ये दो मालाएँ लेता आया, चार आने दाम है।

भक्तगण प्राय: सब ही चले गए। ठाकुर मणि से पाँवों पर हाथ सहला देने के लिए तथा हवा करने के लिए कह रहे हैं।